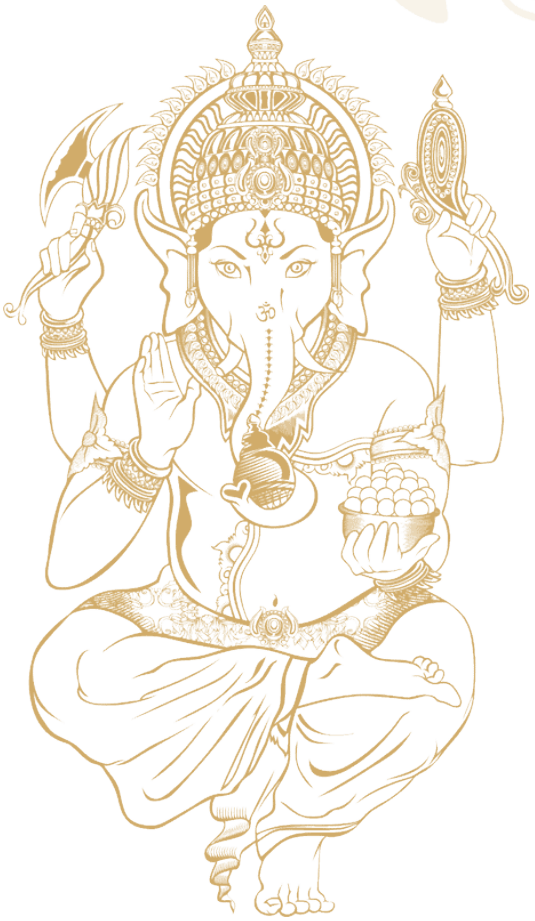

Mr nishkarsh

Yashu

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119418403

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
05/08/1995	जन्म तिथि	27/10/1995
शनिवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 09:25:00	जन्म समय	19:00:00 घंटे
घटी 08:50:23	जन्म समय(घटी)	31:07:31 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Alwar
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	27:32:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	76:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:23:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:52:50	सूर्योदय	06:30:42
19:12:05	सूर्यास्त	17:44:19
23:47:54	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:01

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 1वर्ष 8मा 29दि	04:15:21	कन्या	लग्न	वृष	03:41:43	बुध 5वर्ष 10मा 0दि
बुध	18:29:26	कर्क	सूर्य	तुला	09:51:18	शुक्र
04/05/2016	01:52:35	वृश्चि	चंद्र	वृश्चि	25:25:29	27/08/2008
04/05/2033	15:05:14	कन्या	मंगल	वृश्चि	11:00:23	27/08/2028
बुध 01/10/2018	27:07:49	कर्क	बुध	कन्या	23:48:11	शुक्र 27/12/2011
केतु 28/09/2019	11:44:30	वृश्चि	गुरु	वृश्चि	21:20:12	सूर्य 26/12/2012
शुक्र 29/07/2022	14:07:36	कर्क	शुक्र	तुला	27:39:15	चन्द्र 27/08/2014
सूर्य 04/06/2023	00:14:03	मीन व	शनि व	कुंभ	24:44:38	मंगल 27/10/2015
चन्द्र 03/11/2024	06:05:31	तुला व	राहु व	तुला	02:41:48	राहु 27/10/2018
मंगल 31/10/2025	06:05:31	मेष व	केतु व	मेष	02:41:48	गुरु 27/06/2021
राहु 19/05/2028	04:07:36	मक व	हर्ष	मक	02:54:48	शनि 27/08/2024
गुरु 25/08/2030	29:51:45	धनु व	नेप	धनु	29:06:49	बुध 28/06/2027
शनि 04/05/2033	04:01:17	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	05:39:31	केतु 27/08/2028

लग्न-चलित

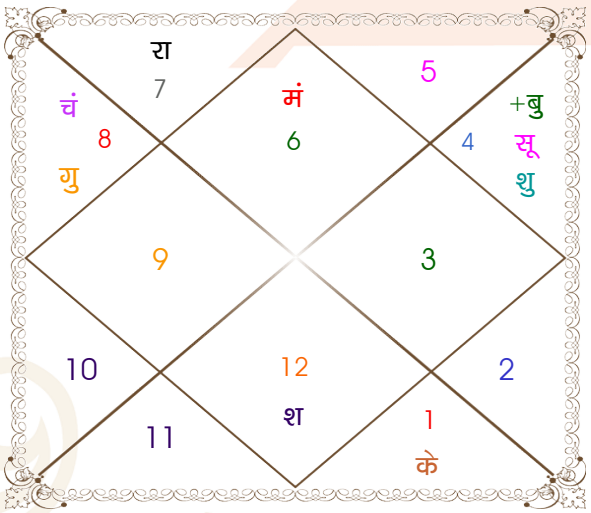

लग्न-चलित

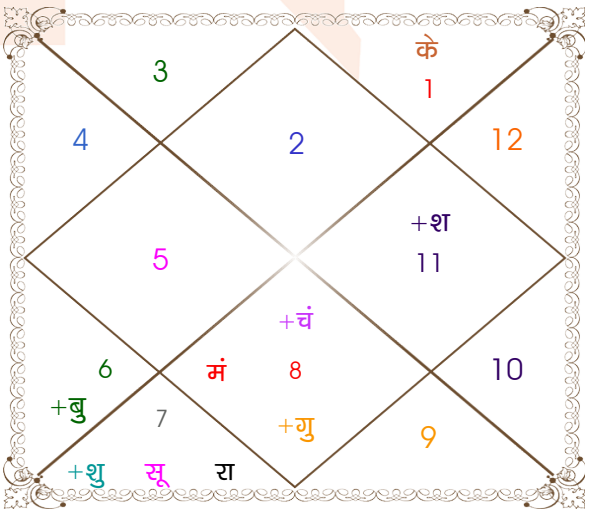

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	कीटक	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	मृग	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	31.50		

Mr nishkarsh का वर्ग सर्प है तथा लैन का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr nishkarsh और लैन का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr nishkarsh मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

लैन मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल लैन कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र लैन कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु लैन कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Mr nishkarsh कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr nishkarsh तथा लैन में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।